

नौकरी की किताब

सत्र 21: भगवान की वाणी 1 और अय्यूब की प्रतिक्रिया (अय्यूब 28-40:5)

जॉन वाल्टन द्वारा

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 21, भगवान का भाषण 1 और अय्यूब की प्रतिक्रिया, अय्यूब 38-40:5 है।

यहोवा के भाषणों का परिचय (अय्यूब 38-40:5) [00:28-1:52]

अब हम अंततः पुस्तक के सबसे महत्वपूर्ण भाग पर पहुँच गए हैं: यहोवा के भाषण। निस्संदेह, यह तीसरा प्रवचन खंड है। जब हमने सस्पेंस का अनुभव किया तो अय्यूब की बेगुनाही की शपथ हवा में लटकी हुई थी। और इसलिए, अब हम पाते हैं कि यहोवा आकर बोलने वाले हैं। इसकी शुरुआत इस बात से होती है कि प्रभु ने तूफ़ान, बवंडर में से अय्यूब से बात की। यह आम तौर पर भगवान की उपस्थिति की संगत है, लेकिन इसका यह भी अनुमान है कि जो कुछ हो रहा है उससे वह विशेष रूप से खुश नहीं है। निस्संदेह, हम पाते हैं कि ईश्वर हर किसी की सोच में सुधार लाता है।

दिलचस्प बात यह है कि वह अय्यूब की बेगुनाही की शपथ का जवाब नहीं देता है। इसलिए, इसका यह अर्थ नहीं लगाया जा सकता है कि अय्यूब ने परमेश्वर के सामने दबाव डाला है। वह अपने न्याय का बचाव नहीं करता, जो बहुत दिलचस्प है क्योंकि बाकी सभी ने न्याय पर आधारित व्यवस्था स्थापित की है।

गैर-आदेशित दुनिया में जटिलता [1:52-3:18]

तो, हमने जो पाया वह यह है कि इसके बजाय, वह एक पूरी तरह से अलग रणनीति अपनाता है, और वास्तव में, जब वह शुरू करता है, तो आपको आश्चर्य होता है कि वह कहाँ से आ रहा है। क्या चल रहा है? वह जो कर रहा है वह दुनिया की जटिलता को प्रदर्शित करने की कोशिश कर रहा है। यहां तक कि हम व्यवस्थित दुनिया की जटिलता की भी पुष्टि करेंगे। वह बहुत सारे मुद्दों से निपटता है जो बहुत किनारे पर हैं, व्यवस्थित दुनिया के चरम क्षेत्र हैं, ऐसी चीजें हैं जिन्हें मनुष्य बहुत अच्छी

तरह से नहीं समझते हैं। दुनिया की जटिलता दिखाकर, वह अय्यूब की अज्ञानता को प्रदर्शित कर रहा है कि यह कैसे काम करता है और इसे कैसे व्यवस्थित किया जाता है। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि अय्यूब और उसके दोस्त इस आधार पर काम कर रहे हैं कि वे समझते हैं कि दुनिया कैसे व्यवस्थित होती है, और यह न्याय और प्रतिशोध सिद्धांत के अनुसार व्यवस्थित होती है। यहोवा अपने भाषण में जो करता है वह यह प्रदर्शित करता है, वास्तव में, वह दावा करता है कि वहाँ व्यवस्था है जहाँ लोगों ने सोचा कि वहाँ व्यवस्था नहीं है।

आदेश, गैर-आदेश और अव्यवस्था [3:18-5:45]

अब, इस बिंदु पर, मुझे कुछ समय लेने और अपनी शब्दावली समझाने की आवश्यकता है। मैं गैर-आदेश, आदेश और अव्यवस्था का उपयोग करता हूँ। गैर-व्यवस्था स्वभाव से बुरी नहीं है। कभी-कभी इसे अराजकता कहा जाता है, लेकिन यह अच्छा नहीं है क्योंकि इससे पता चलता है कि शायद कुछ मानवकृत है या कुछ ऐसा है जो स्वाभाविक रूप से बुरा है। गैर-आदेश तटस्थ है। अभी तक इसका ऑर्डर नहीं दिया गया है।

मैं एक ऐसी स्थिति के बारे में सोचता हूँ जहाँ आप एक नई जगह पर जा रहे हैं, और आप अपने सभी पैक-अप बक्से लाते हैं और उन्हें कमरे के चारों ओर रखते हैं, अपने नए घर में व्यवस्था लाने के लिए तैयार होते हैं। बक्से गैर-ऑर्डर का प्रतिनिधित्व करते हैं। कोई भी चीज़ उस तरह से काम नहीं कर रही है जैसे उसे करना चाहिए; कुछ भी उद्देश्यपूर्वक रखा या पहुंच योग्य नहीं है। यह सब बक्सों में पैक है, बिना ऑर्डर के, ऑर्डर करने के लिए तैयार है। उत्पत्ति 1 श्लोक दो में गैर-व्यवस्था से शुरू होती है, और भगवान के रचनात्मक कार्य व्यवस्था लाते हैं। अतः सृजन एक व्यवस्था लाने वाली प्रक्रिया है। नीतिवचन हमें बताते हैं कि ईश्वर बुद्धि के माध्यम से सृजन करता है, और बुद्धि, जैसा कि हम पहले ही बात कर चुके हैं, क्रम की खोज करना और चीजों को व्यवस्थित तरीके से समझना, चीजों को समझना है। तो, गैर-आदेश प्रक्रिया का प्रारंभिक भाग है।

वैसे, यह लगभग सभी प्राचीन निकट पूर्वी ब्रह्मांड विज्ञान में सच है। वे गैर-आदेश से शुरू करते हैं। फिर आपको ऑर्डर मिलेगा। जब ईश्वर उत्पत्ति में सृजन करता है, तो वह सभी गैर-व्यवस्था को भंग नहीं करता है; आखिरकार, बगीचे के अंदर एक आदेशित स्थान है और बगीचे के बाहर एक गैर-

आदेशित स्थान है। समुद्र अभी भी वहीं है, अव्यवस्थित। और इसलिए, भगवान एक इष्टतम आदेश लेकर आए हैं। जब वह कहता रहता है कि यह अच्छा है तो इसका यही मतलब है। यह इस व्यवस्थित प्रणाली में आवश्यकतानुसार कार्य कर रहा है। अधिकांश प्राचीन निकट पूर्वी लोग इसी प्रकार की अवधारणा के बारे में बात करते हैं; मिस्र में, हमारे पास मात की अवधारणा है, जो आदेश है।

प्राचीन विश्व के सभी प्रकार के साहित्य का केंद्र बिंदु यही है। ब्रह्माण्ड विज्ञान और कानून या शिलालेखों में अक्सर इस बारे में बात की जाती है कि राजा कैसे व्यवस्था लाता है। इसलिए, ऑर्डर बहुत महत्वपूर्ण है।

लेकिन अभी भी गैर-व्यवस्थित दुनिया मौजूद है। लोगों को व्यवस्था लाने में मदद करने के लिए भगवान की छवि में बनाया गया है। हम भगवान, उप-शासनकर्ताओं के साथ साझेदारी कर रहे हैं, व्यवस्था लाने की उनकी योजनाओं में भाग ले रहे हैं। तो, हमारे पास अभी भी दुनिया में गैर-व्यवस्था है और हमारे पास व्यवस्था है जैसा कि भगवान ने इसे लाया है।

लेकिन फिर एक तीसरा तत्व विकार है। मैं इसका उपयोग आदेश के विरुद्ध इन खतरों का वर्णन करने के लिए करता हूं जो बुराई से उत्पन्न होते हैं। अव्यवस्था एक ऐसी चीज़ है जो स्वाभाविक रूप से बुराई है। तो, हम व्यवस्था, गैर-व्यवस्था और अव्यवस्था की दुनिया में रहते हैं।

नौकरी और गैर-आदेश और प्रतिशोध सिद्धांत [5:45-8:08]

अय्यूब और उसके दोस्तों ने सोचा है कि उनके जीवन में सभी अव्यवस्था, पीड़ा और उस तरह की चीजें अव्यवस्था और बुरे कार्यों से आती हैं; यह प्रतिकार सिद्धांत है। इसलिए, जैसा कि भगवान ब्रह्माण्ड के उन क्षेत्रों के बारे में बात करते हैं जो प्रदर्शित करते हैं कि गैर-आदेश के लिए भी आदेश है, यहां तक कि जिन चीजों को गैर-आदेशित माना जाता है उनमें भी आदेश है, वह दिखा रहे हैं कि वे हैं, अय्यूब और उसके दोस्त, कि वे नहीं हैं समीकरण बनाने के क्रम के बारे में वास्तव में पर्याप्त जानकार। तो, ऐसा करने में, भगवान एक सिद्धांत के आत्मविश्वासपूर्ण सूत्रीकरण का खंडन करते हैं जो दुनिया के संचालन को एक सरल प्रस्ताव, प्रतिशोध सिद्धांत तक सीमित कर देता है। इस प्रक्रिया में, वह इस विचार को खारिज कर देता है कि न्याय व्यवस्था की नींव है।

नौकरी 38 और गैर-आदेश [8:08-10:44]

हम देख सकते हैं कि जब हम अध्याय 38 में देखते हैं, जैसे वह क्रमबद्ध दुनिया के बारे में बात कर रहा है, और हम शुरू करते हैं, मुझे देखने दो, "क्या आपने पृथ्वी के विशाल विस्तार को समझ लिया है?" मैं श्लोक 18 में हूँ, " यदि तुम यह सब जानते हो तो मुझे बताओ। प्रकाश के निवास का मार्ग क्या है? अंधकार कहाँ रहता है? क्या तुम उन्हें उनके स्थानों पर ले जा सकते हो? क्या तुम उनके निवासों का मार्ग जानते हो? निश्चित रूप से तुम्हें पता है, क्योंकि तुम पहले ही पैदा हो चुके थे, तुम इतने साल जी चुके हो।"

वैसे, व्यंग्य की इस अंगूठी पर ध्यान दें। मैंने इस विचार का उल्लेख किया है कि यहोवा के भाषण भी साहित्यिक रचनाएँ हैं। मुझे नहीं लगता कि हमें ईश्वर को व्यंग्य करने वाला मानना चाहिए। बात को स्पष्ट करने के लिए यह उसके मुँह में डाला जाता है।

"क्या तू ने हिम के भण्डार में प्रवेश किया है, वा ओलों के भण्डार देखे हैं, जिन्हें मैं संकट के समय, और युद्ध के दिनों के लिये बचाकर रखता हूँ? जिस स्थान पर बिजली तितर-बितर होती है, उस स्थान का मार्ग क्या है? पूरब की हवाएँ पृथ्वी पर बिखरी हुई हैं?" ध्यान दें कि वह इन ब्रह्मांडीय परिचालनों के बारे में बात कर रहा है, और क्या आप जानते हैं कि वे कैसे काम करते हैं, अय्यूब? परन्तु देखो, विशेष रूप से पद 25, "जो मूसलाधार वर्षा के लिये नहर काटता है, और आंधी के लिये मार्ग काटता है, उस देश में जहाँ कोई नहीं रहता, वह निर्जन मरुभूमि है।" आप देखिए, प्रतिशोध का सिद्धांत न्याय है। व्यवस्था की नींव के रूप में न्याय व्यवस्था में वर्षा की भूमिका होती है। यह निर्णय ला सकता है, बाढ़ ला सकता है; यह समृद्धि ला सकता है, धरती पर उर्वरता ला सकता है और पौधे उगा सकता है।

भगवान एक बात कहते हैं; क्या तुमने ध्यान नहीं दिया कि जहाँ कोई नहीं रहता वहाँ वर्षा होती है? यहां न्याय व्यवस्था में बारिश नहीं चल रही है। भगवान निश्चित रूप से इसका इस तरह उपयोग कर सकते हैं। उन्होंने कुछ श्लोक पहले ही इस विचार का उल्लेख किया था कि वह मुसीबत के समय के लिए आरक्षित हैं। तो, भगवान उन चीज़ों का उपयोग कर सकते हैं, लेकिन वे हमेशा न्याय प्रणाली में काम नहीं करते हैं।

विरोधाभासी प्रतिशोध सिद्धांत और न्याय आधार के रूप में [10:44-11:50]

और इसलिए, हम यहां पाते हैं कि ईश्वर अय्यूब को उसकी कुछ धारणाओं से वंचित कर रहा है क्योंकि वह उसे उसकी अज्ञानता से अवगत कराता है। यह सब दर्शाता है कि प्रतिशोध सिद्धांत यह समझने के लिए उपयुक्त सूत्र नहीं है कि दुनिया कैसे काम करती है।

इस पर अय्यूब की प्रतिक्रिया हमें अध्याय 40 के पहले छंदों में मिलती है। भगवान चुनौती देते हुए कहते हैं: "क्या जो सर्वशक्तिमान से झगड़ा करता है, वह उसे सुधारेगा? जो परमेश्वर पर दोष लगाता है, वह उसे उत्तर दे!" आगे खड़े रहो अय्यूब. अय्यूब ने उत्तर दिया, मैं अयोग्य हूं, मैं तुम्हें कैसे उत्तर दूं? मैं ने अपना हाथ अपने मुंह पर रख लिया। अय्यूब परमेश्वर के प्रश्नों का उत्तर देने में अपनी असमर्थता स्वीकार करता है। वह पर्याप्त नहीं है।

अज्ञान पर्याप्त नहीं है [11:50-12:56]

पुस्तक का लक्ष्य सिर्फ इतना ही नहीं है, "ठीक है, हम कुछ नहीं जानते।" कबूल की गई अज्ञानता हमें उन समाधानों तक नहीं ले जाती जो किताब पेश करती है। यह पुस्तक हमें इस बारे में दृढ़ विश्वास विकसित करने में मदद करना चाहती है कि दुनिया कैसे व्यवस्थित है और भगवान की नीतियों के बारे में कैसे सोचा जाए। निस्संदेह, हम पाते हैं कि अय्यूब ने स्वयं परमेश्वर के बारे में बुरा कहा है। भगवान उस पर उसे चुनौती देने जा रहे हैं। हम इसे अगले भाग में भगवान के दूसरे भाषण के परिचय के रूप में लेंगे, जो न केवल नकारात्मक चीजें लाएगा, जो हम नहीं जानते हैं, बल्कि यह कुछ सकारात्मक सलाह देगा, और यह ऐसा करेगा इन दो अद्भुत प्राणियों, बेहेमोथ और लेविथान के माध्यम से।

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 21, भगवान का भाषण 1 और अय्यूब की प्रतिक्रिया, अय्यूब 38-40:5 है। [12:56]